“गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में विविध विमर्श”

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय, विजयपुर

पी-एच. डी हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रस्ताव की रूपरेखा

सत्र

2021-2022

पंजीयन संख्या:KSAWUV/Ph.D/477/2020-21

शोधार्थी

गंगाबाई बोरगी

शोध – निर्देशक
डॉ. नामदेव एम. गौडा
प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष
डॉ. नामदेव एम. गौडा
प्रोफेसर

हिंदी अध्ययन विभाग

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय,

विजयपुर 586108

शोध अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तावना:

साहित्य समाज का महत्व पूर्ण अंग है। साहित्य द्वारा ही इतिहास का सही अवलोकन अगली पीढ़ी के लिए संभव है। साहित्य एक ऐसा शास्त्र है उसमें सभी विषयों का समावेश है। इसलिए निरंतर सजीवता को समेटे हुए अग्रसर होता है। इसी लिए हर युग, संदर्भ का साहित्य उस समय के परिवेश से ओतप्रोत रहता है।

विषय चयन की प्रेरणा एवं पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य में महिलाओं का आगमन साठोत्तरी युग में नई सोच के साथ हुआ है। महिलाओं ने घर की चार दीवारी से बाहर आकर सोचने का कार्य किया और साहित्य में अपने पदचिन्हों को कायम करने का प्रयास किया। ऐसे महत्व पूर्ण लेखिकाओं के क्रम में गीतांजलि श्री का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नारी त्रासदी, उत्पीड़न, समाज में होने वाले धार्मिक पाखंडों को लेकर वास्तविक घटनाओं के आधार पर कहानी और उपन्यासों में रेखांकित किया है और साथ ही वृद्धावस्था आदि विषयों इनके साहित्य का आधार रहा है। नारी को लेकर इनकी सोच सचेत रही है। अपने अध्ययन काल में मैंने गीतांजलि श्री की चर्चित कहानी 'बेल–पत्र' पडी थी और उस कहानी ने मुझे अधिक झकझोरा, तभी मैंने निश्चय किया कि मुझे गीतांजलि श्री के साहित्य को लेकर अधिक अध्ययन करना है। संयोगवश मुझे कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्वविद्यालय विजयपुर ने पी एच. डी करने का मौका दिया। इसी के चलते समय मैं ने **"गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में विविध विमर्श"** विषय को लेकर शोध करने का कार्य जारी रखा।

गीतांजलि श्री समकालीन महिला लेखिकाओं की शृंखला में एक बहुचर्चित लेखिका रही हैं। समकालीन कथा लेखन में उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उन्होंने **'वैराग्य', 'अनुगूँज', 'मार्च, माँ और साकुरा', 'यहाँ हाथी रहते थे' और 'प्रतिनिधि कहानियाँ'** पाँच कहानी संग्रह है। उनके उपन्यास भी पाँच है जिसमें **'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'तिरोहित', 'खाली जगह' और 'रेत समाधि'।** हिंदी साहित्य में गीतांजलि श्री का एक महत्व पूर्ण स्थान है। **गीतांजलि श्री** द्वारा रचित **'रेत समाधि'** उपन्यास को अंग्रेजी में डेजी रॉकवेल ने **'टूंब ऑफ सैंड'** के नाम से अनुवाद किया है। इस उपन्यास को 2022 का **अंतरराष्ट्रीय बुकर** पुरस्कार मिला है। हिंदी साहित्य क्षेत्र में पहली बार गीतांजलि श्री को बुकर पुरस्कार मिला है। और पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय लेखिका है। यह पुरस्कार साहित्य क्षेत्र के लिए गर्व की बात है।

उदेश्य एवं महत्व

समकालीन महिला कथाकारों में गीतांजलि श्री का अपना महत्व पूर्ण स्थान है। गीतांजलि श्री का कथा साहित्य कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से अनुपम सृजन हैं। उन्होंने व्यष्टि एवं समष्टि का पूर्ण रूप से विचार किया है और उसे अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त किया हैं। यह तो स्वीकार करना ही होगा कि साहित्यकार अपने समय एवं स्थिति के प्रति चिंतित रहता है और उसे अभिव्यक्त करना उसका साहित्यिक कर्तव्य एवं कर्म होता हैं। इसलिए गीतांजलि श्री के साहित्य में नारी के जीवन को केंद्र में रखते हुए आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, सांप्रदायिक, वृद्धावस्था, पर्यावरण एवं मनोवैज्ञानिक आयामों पर चिंतन एवं सृजन परिलक्षित होता है। उनका कथा साहित्य काल्पनिक न होकर यथार्थ की भूमि पर स्थित है। जिसमें अपने समय, स्थिति, बदलाव का प्रामाणिक चित्रण किया हैं। और पाठक वर्ग इनके साहित्य को पढ़ने के बाद समय और संदर्भ का अनुमान लगा सकते है। इसलिए पाठक वर्ग इनके साहित्य के प्रति आकर्षित रहता है। यही एक लेखक की प्रतिष्ठा भी है।

कर्नाटक राज्य अक्कमहादेवी महिला विश्व विद्यालय, विजयपुर

हिंदी अध्ययन विभाग

पि-एच. डी शोध प्रबंध संबंधी पाठ्यक्रम

शीर्षक : "गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में विविध विमर्श"

प्रथम अध्याय : विमर्श का सैद्धांतिक विवेचन

1.1 विमर्श शब्द की उत्पत्ति

1.2 विमर्श अर्थ एवं परिभाषा

1.3 विमर्श - भारतीय दृष्टिकोण

1.4 विमर्श – पाश्चात्य दृष्टिकोण

1.5 हिंदी साहित्य के संदर्भ में विमर्श का स्वरूप

1.6 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में विविध विमर्श

2.1 सामाजिक विमर्श

2.2 धार्मिक विमर्श

2.3 आर्थिक विमर्श

2.4 राजनीतिक विमर्श

2.5 सांस्कृतिक विमर्श

2.6 अल्पसंख्यक विमर्श

2.7 वृद्ध विमर्श

2.8 पर्यावरण विमर्श

2.9 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा साहित्य में सामाजिक विमर्श

3.1 पारिवारिक विमर्श

3.1.1 संयुक्त परिवार

3.1.2 परिवार में विघटन

3.1.3 जातिभेद

3.1.4 पीढियों का चित्रण

3.1.5 मध्यवर्गीय जीवन

3.1.6 नारी जीवन

3.1.7 आत्मनिर्भर नारी

3.1.8 नारी शोषण

3.1.9 विधवा नारी जीवन

3.1.10 स्त्रियों का घरेलू जीवन

3.1.11 प्रेम का स्वरूप

3.1.12 ग्रामीण एवं महानगरीय परिवेश

3.2 धार्मिक विमर्श

3.2.1 धार्मिक भेदभाव

3.2.2 हिंसक घटनाएँ

3.2.3 धार्मिक सौहार्द

3.2.4 असुरक्षा की भावना

3.3 राजनैतिक विमर्श

3.3.1 राजनैतिक परिवर्तन

3.3.2 राजनेताओं का स्वार्थ

3.3.3 राजनैतिक आतंक

3.3.4 आतंकवाद का संदर्भ

3.3.5 लोकतंत्र की विकृतियाँ

3.3.6 शासक और जनता

3.3.7 नेतृत्व का संकट

3.3.8 सांप्रदायिक भेदभाव

3.4 सांस्कृतिक विमर्श

3.4.1 देश प्रदेश से संबंध

3.4.2 आचार-विचार

3.4.3 तीज त्योहार

3.4.4 अंधविश्वास

3.5 आर्थिक विमर्श

3.5.1 विभिन्न आर्थिक वर्ग और उनके संबंध

3.5.2 गरीबी, बेरोजगारी, और आर्थिक शोषण

3.5.3 भ्रष्टाचार का विकराल रुप

3.6 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : गीतांजलि श्री के कथासाहित्य में अल्पसंख्यक विमर्श

4.1 अल्पसंख्यकों की सांस्कृतिक धारणा

4.1.1 अल्पसंख्यकों का देश प्रदेश से संबंध

4.1.2 अल्पसंख्यकों के अचार-विचार

4.1.3 अल्पसंख्यकों के तीज त्योहार

4.1.4अल्पसंख्यकों में अंधविश्वास

4.2 अल्पसंख्यकों की धार्मिक स्थिति

4.2.1 धार्मिक भेदभाव

4.2.2 हिंसक घटनाएँ

4.2.3 धार्मिक सौहार्द

4.2.4 असुरक्षा की भावना

4.3 अल्पसंख्यकों की राजनैतिक स्थिति

4.3.1 राजनेताओं तथा धर्माधिकारियों का स्वार्थ

4.3.2 संचार माध्यमों की भूमिका

4.4 अल्पसंख्यक स्त्री की स्थिति

4.5 निष्कर्ष

पंचम अध्याय : गीतांजलि के कथासाहित्य में वृद्ध विमर्श

5.1 वृद्ध जीवन की स्थिति गति

5.1.1 सेवा निवृत्त होने का संकट

5.1.2 आर्थिक संकट

5.2 परिवार से बिछुडने का संकट

5.3 दूसरों पर निर्भर होने का संकट

5.4 अकेलपन की पीडा

5.5 वृद्धों के प्रति समाज की मानसिकथा

5.6 निष्कर्ष

षष्ठम अध्याय : गीतांजलि श्री के कथासाहित्य में पर्यावरण विमर्श

6.1 पर्यावरण बचाव के प्रति जागरूकता

6.2 पर्यावरण दूषण के विविध संदर्भ

6.3 पेडों को बचाने के प्रति जागरूकता

6.4 सुनहरे भविष्य के लिए पर्यावरण की आवश्यकता

6.5 निष्कर्ष

सप्तम अध्याय : गीतांजलि श्री के कथा साहित्य की भाषा शैली

7.1 कथा साहित्य की भाषागत विशेषताएँ

7.1.1 तत्सम शब्दों का प्रयोग

7.1.2 तद्भव शब्दों का प्रयोग

7.1.3 अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

7.1.4 उर्दू, अरबी, फारसी शब्दों का प्रयोग

7.1.5 आंचलिक शब्दों का प्रयोग

7.1.6 मुहावरे लोकोक्तियों का प्रयोग

7.2 कथा साहित्य की शैलीगत विशेषताएँ

7.2.1 वर्णनात्मक शैली

7.2.2 विवरणात्मक शैली

7.2.3 संवादात्मक शैली

7.2.4 आत्मकथात्मक शैली

7.2.5 मनोविश्लेषणात्मक शैली

7.2.6 प्रतीकात्मक शैली

7.2.7 काव्यात्मक शैली

7.2.8 पूर्वदीप्ति या फ्लैशबैक शैली

7.2.9 पात्रानुकुल शैली

7.3 निष्कर्ष

* **उपसंहार**

* उपलब्धियाँ

* सीमाएँ

* संभावनाएँ

* परिशिष्ट

* आधार ग्रंथ

* संदर्भ ग्रंथ

आधार ग्रंथ

क्र. सं	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशन
1	माई	गीतांजलि श्री	2014	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2	तिरोहित	गीतांजलि श्री	2015	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3	हमारा शहर उस बरस	गीतांजलि श्री	2016	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4	रेत – समाधि	गीतांजलि श्री	2018	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5	प्रतिनिधि कहानियाँ	गीतांजलि श्री	2018	राजकमल पेपरबैकस, दिल्ली
6	मार्च, माँ और साकुरा	गीतांजलि श्री	2008	हार्पर सकालींस पब्लिशर्स इंडिया ए जाइन्ट वेंचर विद नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ सूची

क्र. सं	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन वर्ष	प्रकाशन
1	शोध संस्कृति	डॉ. संजय नवाले	2016	यमन प्रकाशन, कानपुर
2	अनुसंधान सृजन व प्रक्रिया	डॉ. अर्जुन तड़वी	2011	चिंतन प्रकाशन, हंसपूर-कानपुर